

प्रेषक,

एन0एस0नपलच्याल,
प्रमुख सचिव,
उत्तराखण्ड शासन।

सेवामें,

जिलाधिकारी,
हरिद्वार।

राजस्व विभाग

देहरादून: दिनांक 26 जून, 2008

विषय:- मै0 उत्तम शुगर मिल प्रा0लि0 को जनपद हरिद्वार के ग्राम अहमदपुर में फूट फार्म एण्ड बेसिस इण्डस्ट्रीज की स्थापना हेतु कुल 6.3910 है0 भूमि कय करने की अनुमति प्रदान किये जाने के सम्बन्ध में।

महोदय,

उपर्युक्त विषयक आपके पत्र संख्या-1304/भूमि व्यवस्था-भू0क0 दिनांक 07-12-2007 के सन्दर्भ में मुझे यह कहने का निदेश हुआ है कि श्री राज्यपाल महोदय मै0 उत्तम शुगर मिल प्रा0लि0 को उ0प्र0 जमींदारी विनाश एवं भूमि व्यवस्था अधिनियम, 1950 की धारा-154(2) तथा उत्तरांचल (उत्तर प्रदेश जमींदारी विनाश एवं भूमि व्यवस्था अधिनियम, 1950) (अनुकूलन एवं उपात्तरण आदेश, 2001) (संशोधन) अधिनियम, 2003 दिनांक 15-1-2004 की धारा-154(4)(3)(क)(V) के अन्तर्गत जनपद हरिद्वार के ग्राम अहमदपुर में फूट फार्म एण्ड बेसिस इण्डस्ट्रीज की स्थापना हेतु जिलाधिकारी के पत्र सं0 1304/ भूमि व्यवस्था-भूमि कय दिनांक 07.02.2007 के द्वारा संस्तुत गाटा सं0 116,117,119,121,122,124,125,126 की कुल 6.3910 है0 भूमि कय करने की अनुमति निम्नलिखित प्रतिबन्धों के साथ प्रदान करते हैं:-

1- क्रेता धारा-129-ख के अधीन विशेष श्रेणी का भूमिधर बना रहेगा और ऐसा भूमिधर भविष्य में केवल राज्य सरकार या जिले के कलैक्टर, जैसी भी स्थिति हो, की अनुमति से ही भूमि कय करने के लिये अर्ह होगा।

2- क्रेता बैंक या वित्तीय संस्थाओं से ऋण प्राप्त करने के लिये अपनी भूमि बन्धक या दृष्टि बन्धित कर सकेगा तथा धारा-129 के अन्तर्गत भूमिधरी अधिकारों से प्राप्त होने वाले अन्य लाभों को भी ग्रहण कर सकेगा।

3- क्रेता द्वारा कय की गई भूमि का उपयोग दो वर्ष की अवधि के अन्दर, जिसकी गणना भूमि के विक्रय विलेख के पंजीकरण की तिथि से की जायेगी अथवा उसके बाद ऐसी अवधि के अन्दर जिसको राज्य सरकार द्वारा ऐसे कारणों से जिन्हें लिखित रूप में अभिलिखित किया जायेगा, उसी प्रयोजन (फूट फार्म एण्ड बेसिस इण्डस्ट्रीज की स्थापना) के लिये करेगा जिसके लिये अनुज्ञा प्रदान की गई है। यदि वह ऐसा नहीं करता अथवा उस भूमि का उपयोग जिसके लिये उसे स्वीकृत किया गया था, उससे

भिन्न किसी अन्य प्रयोजन हेतु करता है अथवा जिस प्रयोजनार्थ कय किया गया था उससे भिन्न प्रयोजन के लिये विकय, उपहार या अन्यथा भूमि का अन्तरण करता है तो ऐसा अन्तरण उक्त अधिनियम के प्रयोजन हेतु शून्य हो जायेगा और धारा-167 के परिणाम लागू होंगे।

4- जिस भूमि का संक्रमण प्रस्तावित है उसके भूस्वामी अनुसूचित जनजाति के न हों और अनुसूचित जाति के भूमिधर होने की स्थिति में भूमि कय से पूर्व सम्बन्धित जिलाधिकारी से नियमानुसार 157क जमींदारी विनाश अधिनियम के अन्तर्गत अवश्य अनुमति प्राप्त की जायेगी।

5- जिस भूमि का संक्रमण प्रस्तावित है उसके भूस्वामी असंक्रमणीय अधिकार वाले भूमिधर न हों।

6- शासन द्वारा दी गई भूमि कय की अनुमति शासनादेश निर्गत होने की तिथि से 180 दिन तक वैध रहेगी। उक्त 180 दिनों के भीतर प्रस्तावित परियोजना का निर्माण कार्य प्रारम्भ करना होगा एवं दो वर्ष के भीतर निर्माण कार्य पूर्ण करना होगा।

7- प्रस्तावित उद्योग का निर्माण कार्य राज्य औद्योगिक विकास प्राधिकरण (सीडा)-2005 के अन्तर्गत GIDCR-2005 में उल्लिखित शर्तों के अधीन होगा। डेवलपर्स द्वारा GIDCR की शर्तों का पूर्णतः पालन किया जायेगा तथा इसका क्रियान्वयन का अनुश्रवण उद्योग विभाग द्वारा किया जायेगा।

8- कय की जाने वाली भूमि का भू-उपयोग यदि औद्योगिक से भिन्न हो तो उसे नियमानुसार औद्योगिक में परिवर्तित कराकर निर्धारित नीति/मार्गदर्शी सिद्धान्तों के अन्तर्गत प्रचलित नियमों/मानकों एवं भवन उपविधियों के अन्तर्गत नियमानुसार कार्यवाही करते हुये औद्योगिक प्रयोजन हेतु भवन निर्माण का प्लान सक्षम अधिकारी से स्वीकृत कराने के पश्चात ही प्रस्तावित स्थल पर निर्माण कार्य प्रारम्भ किया जायेगा।

9- प्रस्तावित इकाई का निर्माण कार्य सीडा से लेआऊट स्वीकृत कराने के पश्चात ही निर्माण कार्य प्रारम्भ किया जायेगा।

10- प्रश्नगत उद्योग की स्थापना के सम्बन्ध में स्पॉट जोनिंग क्षेत्र के लिये निश्चित सिद्धान्त/नितियों का पूर्णतः पालन किया जायेगा।

11- प्रस्तावित उद्योग में उत्तराखण्ड मूल के बेरोजगारों को 70 प्रतिशत से अधिक का रोजगार उपलब्ध कराया जायेगा।

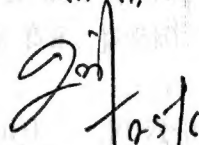
12- इकाई द्वारा कय की जाने वाली भूमि का उपयोग मात्र फूट फार्म एण्ड बेसिस इण्डस्ट्रीज की स्थापना हेतु किया जायेगा।

संख्या एवं तददिनांक।

प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित:-

- 1- मुख्य राजस्व आयुक्त, उत्तराखण्ड, देहरादून
- 2- आयुक्त, गढ़वाल मण्डल, पौड़ी।
- 3- सचिव, औद्योगिक विकास विभाग, उत्तराखण्ड शासन।
- 4- सचिव, श्रम एवं सेवायोजन विभाग, उत्तराखण्ड शासन।
- 5- सचिव, ऊर्जा विभाग, उत्तराखण्ड शासन।
- 6- निदेशक, उद्योग इण्डस्ट्रीयल इस्टेट, पटेलनगर, देहरादून।
- 7- मुख्य कार्यकारी अधिकारी, सीडा, 2-न्यू कैन्ट रोड, सिडकुल, देहरादून।
- 8- श्री टी0 कानन, प्रबन्ध निदेशक, उत्तम शुगर मिल, ग्राम लिब्वरहेडी, रुडकी, हरिद्वार।
- 9- निदेशक, एन0आई0सी0, उत्तराखण्ड, सचिवालय।
- 10- गार्ड फाईल।

आज्ञा से,


(सन्तोष बैडोनी)
अनुसचिव।

(सचिव, उत्तराखण्ड शासन)

सचिव, उत्तराखण्ड शासन

13- इकाई में पूंजी निवेश/निर्माण कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व पर्यावरण संरक्षण एवं प्रदूषण नियंत्रण हेतु उत्तराखण्ड प्रदूषण नियंत्रण तथा अग्निशमन आदि विभागों से नियमानुसार अनापत्ति/सहमति प्राप्त करनी होगी।

14- प्रस्तावित स्थल पर अवस्थापना विकास से सम्बन्धित कार्यों का दायित्व सम्बन्धित इकाई का होगा। प्रश्नगत उद्योग की स्थापना के सम्बन्ध में अनापत्ति मात्र भूमि कय व्यवस्था के सन्दर्भ में दी जा रही है। प्रश्नगत अनापत्ति/सहमति पैकेज के अन्तर्गत देय सुविधाओं के लिये आधार के रूप में उद्धृत नहीं की जा सकेगी।

15- कय की जाने वाली भूमि पर प्रस्तावित उद्योग की स्थापना में भारत सरकार द्वारा घोषित विशेष पैकेज का लाभ अनुमन्य नहीं होगा।

16- किसी भी दशा में प्रस्तावित क्रेताओं को प्रस्तावित भूमि के अतिरिक्त अन्य भूमि के उपयोग की अनुमति नहीं होगी एवं सार्वजनिक उपयोग की भूमि या अन्य कोई भूमि पर कब्जा न हो इसके लिये भूमि कय के तत्काल बाद उसका सीमांकन कर लिया जायेगा।

17- भूमि का विक्रय अपरिहार्य परिस्थितियों के अतिरिक्त अनुमन्य नहीं होगा एवं ऐसी दशा में विक्रय किये जाने हेतु सकारण शासन का अनुमोदन प्राप्त करना होगा।

18- नियमानुसार योजना प्रारम्भ करने से पूर्व सम्बन्धित विभागों/संस्थाओं से विधिक व अन्य औपचारिकतायें प्राप्त कर ली जायेगी।

19- जिलाधिकारी द्वारा यह सुनिश्चित करा लिया जायेगा कि वर्तमान में प्रस्तावित भूमि हर प्रकार से पूर्व में अनुचित तरीके से कय की गयी भूमि से पृथक हो ताकि वर्तमान अनुमति की आड में पूर्व में अनियमित रूप से कय की गयी भूमि के नियमितिकरण का प्रयास सम्बन्धित इकाई द्वारा न किया जा सके।

20- उपरोक्त शर्तों/प्रतिबन्धों का उल्लंघन होने पर अथवा किसी अन्य कारणों से, जिसे शासन उचित समझता हो, प्रश्नगत स्वीकृति निरस्त कर दी जायेगी।

कृपया तदनुसार आवश्यक कार्यवाही करने का कष्ट करें।

भवदीय,

(एन0एस0नपलच्याल)
प्रमुख सचिव।

